तित्थयर

वर्ष ३० अंक १० जनवरी २००७

॥ जैन भवन ॥

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कर्मास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

卐

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - ३० अंक - १०, जनवरी २००७

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता – Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655,

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 100.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 300.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	मूर्ति उपास्य है और मन्दिर-उपासना स्थल	सा. वा. महोपाध्याय विनयसागर	४७३
२.	जैनधर्म में तपस्या की सर्वोच्च-साधना है **संथारा**	नवरतन डागा	४७९
३.	सुवर्णभूमि में कालकाचार्य	डॉ. उमाकान्त शाह	४८३
४.	योगशतक	डॉ. इन्दुकला हीराचन्द झवेरी	४९३
५.	सिंहल की राजकन्या (**सुदर्शना**)	आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.	४९६

मूल्य - १०.०० रूपये

कवरपृष्ठ : गोपाचल पर्वत (ग्वालियर) में स्थित प्राचीन तीर्थंकर मूर्तियाँ

Composed by:

Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

मूर्ति उपास्य है और मन्दिर उपासना स्थल

सा. वा. महोपाध्याय विनयसागर

(स्वश्री ताजमलजी बोथरा द्वारा लिखित पुस्तक- 'मूर्तिवाद और जैन संस्कृति' के लिए लिखी गई भूमिका)

चैत्य, मन्दिर, मूर्तियाँ और चरण संस्कृति, कला और इतिहास की सर्वदा से सजग प्रहरी तो रही ही हैं, साथ ही साधक के आत्मोत्थान के प्रबलतम साधन/अवलम्बन भी रहे हैं। भगवत्प्ररूपित जैनागम सूत्रकृतांग, भगवती, ज्ञाता, उपासकदशा, राजप्रश्नीय, जीवाभिगम जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, निरयावली, महानिशीथ आदि-साहित्य तो एक स्वर से मूर्ति की उपादेयता एवं महत्ता पूर्णरूपेण स्थापित करते हुए उसके अर्चन और पूजन द्रव्य एवं भाव को भव्यों के लिये परमोत्कर्ष साधन मानते हैं। सप्तम गुणस्थान आरोहण से पूर्व पूजा माध्यम से इसकी सर्वोच्चता भी प्रतिष्ठापित करते हैं। आगमतुल्य परवर्ती प्रकरण साहित्य में आप्त कोटि के जैनाचार्यों ने तो मूर्तियों की आराधना-पूजा की गुणवत्ता के साथ सम्बन्ध स्थापित कर इसे मुक्ति सोपान भी घोषित किया है।

योग और ध्यान में साधना की दृष्टि से भी मूर्ति का आलम्बन सर्वोत्कृष्ट प्रयोग माना जाता है।

वैज्ञानिक साधनों के परिप्रेक्ष्य में उत्खननादि द्वारा प्राप्त मूर्तियों के अध्ययनोपरान्त इतिहासकारों ने मूर्तियों का काल-निर्धारण भगवान पार्श्वनाथ के पूर्व तक का स्वीकार किया है अर्थात् ईसा पूर्व आठवीं-नवीं शताब्दी तक की प्राचीनता प्रमाणित की है।

यह अनुभव सिद्ध है कि प्राचीन युद्धस्थानों, हल्दीघाटी आदि, का अवलोकन करते समय यात्री की नस-नस में वीर रस का उद्रेक

स्वतः ही संचारित होने लगता है। वैसे ही तीर्थंकरों, केवलियों, परमोच्चपद प्राप्त महापुरुषों के चरणों से पवित्रित तीर्थ या अतिशय तीर्थों की यात्रा करते समय श्रद्धालुओं का मानस वैराग्य-शान्तरस की उर्मियों से ओत-प्रोत हो जाता है। रग-रग में विशुद्धभावों का प्राचुर्य समुद्र लहरियों के समान कल्लोलें भरने लगता है। इस दृष्टि से मूर्ति पूजा के साथ तीर्थयात्रा की उपयोगिता एवं महत्ता भी स्वतः सिद्ध हो जाती है।

मूर्ति में व्याप्त बाह्य आडम्बरों की विपुलता की देखकर जैन समाज में कतिपय व्यक्तियों का १५वीं शती के अन्त में विरोधी स्वर मुखरित हुआ। यहीं से मूर्ति पूजा विरोध में नये पंथ का आविर्भाव हुआ।

यहाँ यह विचारणीय है कि इस पंथ के संस्थापकों से लेकर वि. २०वीं शती के तृतीय चरण तक पूज्य या आचार्य प्रायःकर संस्कृत एवं प्राकृत के ज्ञान से शून्य थे और टब्बों **भाषात्मक टिप्पण** से आगमों का अर्थ करते थे। पंचांगी की अवमानना कर देने से आगमों के अन्तर्रहस्य से अनभिज्ञ थे। यही कारण है कि निक्षेपों का गूढार्थ ज्ञान न होने से जिस आडम्बरात्मक विक्रिया का विरोध करना था, उसके स्थान पर मूर्ति के अस्तित्व का भी उन्मूलन कर डाला।

आज भी इन समुदायों के विज्ञगण अन्तर्मन से मूर्ति की उपादेयता स्वीकार करते हुए भी सम्प्रदायाभिनिवेश के कारण विरोध ही करते हैं। इनमें से कतिपय सम्प्रदाय मोह से ग्रसित होकर अबोधजनों को शपथ / प्रत्याख्यान भी दिलाकर स्वयं को कृतकृत्य समझते हैं।

शास्त्रों से अनभिज्ञ कतिपय आग्रही साधु आज भी भोले-भाले अज्ञजनों के समक्ष इस प्रकार की दलीलें देते हुए दृष्टिगोचर होते हैं :–

क्यों श्रावकजी! कभी पत्थर की गाय दूध देती है क्या? नहीं देती है न?

तो भला सोचो! पत्थर के भगवान तुम्हें क्या देंगे।

यह तर्क प्रस्तुत करने वाले स्वयं कितने पानी में हैं? विचार करिये।

पत्थर में उत्कीर्ण आकृति को देखकर, अनुभूमिसिद्ध विचारों से जब इस पत्थर में गाय का आरोपण करते हैं और गाय का प्रकृतिजन्य दूध देने का गुणत्व धर्म भी आरोपित करते हैं। तभी पत्थर की गाय दूध शब्दों का उच्चारण संभव है। उच्चारण करते ही नाम निक्षेप और स्थापना निक्षेप स्वतः सिद्ध हो जाता है। ऐसी अवस्था में शेष क्या रह जाता है?

इन समुदायों के अनुयायी प्रातःकाल में दिवंगत गुरुओं का स्वयं स्मरण एवं नमन करते हैं, भक्तों को स्मरण-वन्दन के लिए प्रेरित करते हैं, जयकार बुलवाते हैं और उनके नाम वस्त्र-पट्ट आदि पर लिखवाकर पण्डालों में टंगवाते हैं।

इस कर्त्तव्य पर तनिक गहराई से सोचिये-इस अवसर्पिणी काल में पंचम आरे में मुक्ति मार्ग बंद है, केवलज्ञान लुप्त है। अतः यह निश्चित है कि उनके दिवंगत गुरु मुक्ति न पाकर, चारों गतियों में ही भ्रमण कर रहे हैं। **सामान्यतः शास्त्रविरुद्ध प्ररूपणा के कारण इनकी सद्गति/देवलोक गमन भी संभव नहीं है।** आत्मा के देहाधिष्ठित होने पर ही नामकरण होता है और आत्मा के देहभिन्न होते ही देह जला दी जाती है। इधर आत्मा अन्य गति में और अन्य देहाश्रित होकर नवीन नाम प्राप्त कर लेती है। तब भला सोचिये, ये साधुगण किसका स्मरण वन्दन करते हैं? चतुर्गति भ्रमण करती हुई अप्रत्यक्ष आत्माओं का?

जिस स्थान पर नारी के चित्र चित्रित हों या दीवारों पर लगे हुए हों, वहां साधुओं को कदापि निवास नहीं करना चाहिए, ऐसी शास्त्राज्ञा है। शास्त्रकारों ने ऐसा क्यों कहा? विचार करिये–क्या कागज में अंकित नारी की प्रतिकृति पंच महाव्रत धारक साधु के साथ बलात्कार कर लेती है या साधु को संभोग के लिये उद्वेलित कर देती है? नहीं, वस्तुतः साधु यदि चित्र में तरुणी के सौन्दर्य और अंगोपांग को देखकर कल्पना में उसे साकार मान लेता है तो वह वासनाजन्य विकारों में हिलोरें और सहवासजन्य कल्पनाओं से इतना अधिक उद्वेलित हो जाता है कि उसका ब्रह्मचर्य महाव्रत पूर्णतः खंडित हो

जाता है। यही नहीं, स्खलित वीर्य होकर हतवीर्य भी बन जाता है। भले ही वह वेष से बाल-ब्रह्मचारी ही क्यों न बना रहे?

वैसे ही यदि साधक भगवत्प्रतिमा का आलंबन लेकर उसके गुणों के साथ तादात्म्य सम्बन्ध स्थापित करता है तो निश्चय ही वह कर्मों की निर्जरा करता हुआ श्रेयस् पथ की ओर अग्रसर होता है।

देखिये, इन समुदायों के प्रायशः साधुओं के फोंटों घरों की शोभा बढ़ाते हुए नजर आते हैं। भक्त नमन करते हैं। धूप भी खेते हैं। यदि चित्रों की कोई अवमानना या हँसी उड़ा देता है तो भक्त क्रोधित हो जाते हैं, भृकुटि तन जाती है, अपशब्दों का उच्चारण भी कर देते हैं और अन्त में हाथापाई पर भी उतर आते हैं। पर क्यों? कागज में अंकित आकृति के लिये कर्मबन्धन क्यों? इसीलिये न कि उसमें उस पुरुष का स्थापना निक्षेप के द्वारा आरोपण कर दिया गया है तब़ क्या कागज, वस्त्र, काष्ठ, धातु या प्रस्तर आदि में भगवत्तत्त्व की स्थापना/आरोपण नहीं किया जा सकता? वन्दनीय-पूजनीय नहीं हो जाती?

यदि ये लोग यह मानते हैं कि जिसमें भाव निक्षेप वर्तमान है, केवलज्ञानधारक है वही वंदनीय एवं पूज्यनीय है। नाम, स्थापना, और द्रव्य भावशून्य हैं अतः अवन्दनीय हैं। यह कथन भी विचारणीय है। देखिये, शास्त्र-सम्मत कथानक में भरत चक्रवर्ती भगवान् ऋषभदेव से समवसरण में प्रश्न करते हैं :-

भरत- इस अवसर्पिणी में अन्य कितने तीर्थंकर होंगे?

ऋषभ- चौबीस तीर्थंकर होंगे।

भरत- आपके इस समवसरण में क्या कोई तीर्थंकर का जीव भी विद्यमान है?

ऋषभ- हाँ, है! समवसरण में, किन्तु समवसरण में नहीं। किन्तु समवसरण के बाहर स्थित त्रिदण्डी वेषधारक तुम्हारा पुत्र मरीचि है जो इस अवसर्पिणी का चौबीसवाँ तीर्थंकर महावीर के नाम से प्रसिद्ध होगा।

भगवान के मुख से सुनकर वर्तमानवद् भाविजिनोऽपि वन्द्यः अर्थात् जैसे वर्तमान में विद्यमान तीर्थंकर वन्दनीय-पूजनीय हैं वैसे ही भविष्य में होने वाला तीर्थंकर जीव भी वन्दनीय होता है, ऐसा सोचकर भरत चक्रवर्ती मरीचि के पास जाकर ससन्मान वन्दन-नमस्कार करता है।

यहाँ सोचने की बात है कि मरीचि शास्त्रविरूद्ध वेषधारी है, उत्सूत्रप्ररूपणा कर भव-भ्रमण बढ़ा रहा है, भविष्य में नरकगामी है और वर्तमान स्वरूप में मरीचि अर्हत्भाव/केवलित्व भाव से लाखों योजन दूर है। ऐसी अवस्था में भरत जैसा विज्ञ एवं प्रज्ञ व्यक्ति ऐसे गर्हित जीव को वन्दन-नमस्कार क्यों करता है? स्पष्ट है कि शास्त्रकारों की दृष्टि से चारों ही निक्षेप समान रूप से स्वीकार्य हैं। द्रव्यनिक्षेप की दृष्टि से भावी तीर्थंकर का जीव भी वन्दनीय है। अतः उनकी उपरोक्त तर्क भी अग्राह्य है।

मतानुयायियों की इस हास्यास्पद सूझ का भी अवलोकन करिये-शास्त्र आगम में आगम चैत्य जैसे शब्द का ये लोग मनोकल्पित अर्थ ज्ञान या साधु करते हैं। किन्तु विचार करने की बात यह है कि जहां भी चैत्य शब्द यक्ष शब्द के साथ आता है वहां तो अर्थ करते हैंः- यक्ष का मन्दिर। और जहां शाश्वत तीर्थंकर मन्दिरों से सम्बन्धित चैत्य शब्द है तो वहां अर्थ करते हैंः- ज्ञान या साधु। क्या मनमाना और खोखला अर्थ है! यह अर्थ कर वे अपनी अज्ञता ख्यापित करते हैं, क्योंकि समस्त कोशों में चैत्य शब्द का अर्थ साधु या ज्ञान मिलता ही नहीं है।

आश्चर्य की बात यह भी है कि अपनी मान्यताओं की प्राचीनता सिद्ध करने के लिये समाज के कुछ चतुर व्यक्तियों ने तीर्थंकरों के चित्रों में तीर्थंकरों के मुख पर मुखपट्टी बंधी हुई दिखाी है। ऐसे अनेकों चित्र इस समाज के भंडारों में प्राप्त होते हैं। जब साकार रूप में तीर्थंकरों की पूजा-मान्यता भी स्वीकार्य नहीं है तो फिर यह प्रपंच जाल फैलाने की इन्हें आवश्यकता क्यों प्रतीत हुई?

इन समुदायों के प्रबुद्ध विद्वान् यह स्वीकार करते हैं कि आगमों में डोरे सहित मुखवस्त्रिका का उल्लेख नहीं है। किन्तु हमारे समुदाय की मान्य परम्परा है।

समग्र जैन समाज की अब तक यह अवधारणा/मान्यता रही है कि आगमों के मूल पाठ में किंचित् रत्तीमात्र भी परिवर्तन नहीं किया जाय, क्योंकि यह जघन्यतम कार्य है और अनन्त संसार का वर्धक है। यही कारण है कि इस परम्परा के समस्त साधुओं ने मूर्तिपूजा और मुखवस्त्रिका के सम्बन्ध में मान्यता भेद होने पर भी मूल-पाठों में कदापि परिवर्तन नहीं किया। किन्तु कुछ समय से मान्यता के व्यामोह ने कतिपय व्यक्तियों को ऐसा जकड़ लिया कि उन्होंने पाठ-परिवर्तन की अनर्थकारी परम्परा को भी अंगीकार कर लिया। फलतः किसी ने तो सूत्र के शब्दो/पाठों में ही परिवर्तन कर डाला और किसी ने ऐसे पाठों को प्रक्षिप्त मानकर मूल से बहिष्कृत ही कर डाला।

अन्तर्मन से साकार-भक्ति/उपासना को स्वीकार करते हुए भी ऐसा गर्हित कार्य कर, केवल अपना ही नहीं अपितु समाज का भी भव-प्रपंच बढ़ाने का प्रयत्न न करें तो श्रेयस्कर होगा।

निष्कर्ष यह है कि केवल सम्प्रदाय के व्यामोह के कारण इन लोगों को सम्यक्त्वदात्री एवं निर्जराकारक जिनेश्वर देवों की प्रतिमाओं से विरोध है, अन्य देवी-देवताओं से नहीं।

मेरा तो सुज्ञ/विज्ञजनों से निवेदन है कि वे मिथ्यात्वोत्पादक कदाग्रह का त्यागकर, शास्त्र सम्मत मूर्ति की उपयोगिता/उपादेयता को सहजभाव स्वीकार करें तथा मूर्ति पूजा में व्याप्त विकृतियों का सचोट खण्डन कर, परम्परागत आदर्श को स्थापित करें।

जैनधर्म में तपस्या की सर्वोच्च साधना है "संथारा"

नवरतन डागा

जिस प्रकार आकाश की शोभा सूर्य से है, फूल की शोभा भंवरे से है, धरती की शोभा हरियाली से है, वचन की शोभा सत्य से है, वैभव की शोभा दान से है, व्यक्ति की शोभा विनय से है ठीक इसी तरह संघ की शोभा श्रावक-श्राविका, साधु-साध्वियों से है और हम सभी के जीवन का लक्ष्य मोक्ष को प्राप्त करना है यानी निराबाध सुख को प्राप्त करना है। इसकी प्रथम सीढ़ी है आरम्भ–परिग्रह को घटाना, दूसरी सीढ़ी है अट्ठारह पापों का त्यागकर शुद्ध संयम पालन करना व तीसरी सीढ़ी है परम शांत चित से धर्म चिन्तन करते हुए सभी से क्षमायाचना करते हुए पण्डित मरण को प्राप्त करना।

गति चार हैं, लेकिन श्रेष्ठ धर्म आराधना की सामग्री मनुष्य गति के जीव में है। वेक्रिय व सुन्दर शरीर होते हुए भी देव व्रत–नियम की आराधना नहीं कर सकते। नरक के जीव कितने दुःखी? प्रत्येक श्वास में अनन्त दुःखी। एक-एक पल असह्य वेदना में निकलता है तो तिर्यंचों को धर्म-अधर्म का विवेक प्राप्त नहीं है। धर्म की सारी साधना करने की गति एक मात्र मनुष्य गति है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरुषार्थों का क्रम भी हमें धर्म और मोक्ष के बीच जीवन जीने का संदेश देता है। और मोक्ष प्राप्ति के लिये संथारा यानी स - स्वयं, थ - स्थिर, र - रहना, अर्थात् स्वयं में स्थिर होना यानी अपने आत्म गुण में स्थिर होना और आत्म गुण ही धर्म है। धर्म की परिभाषा है दुर्गति में गिरते हुए को बचाना।

समाधिमरण यानि संथारा व्रत लेने वाले को यह बात अच्छी तरह से समझ में आ जाती है कि मेरी मृत्यु तो कभी होती नहीं। मेरा शरीर छूटता है, मेरे प्राण छूटते है पर मैं तो कभी मरता ही नहीं। उसके मन में जीने की लालसा भी नहीं है तो मरने की इच्छा भी नहीं है। आत्महत्या करने वाला व्यक्ति अपने को बहुत दुःखी मानकर मरना चाहता है किसी की साक्षी नहीं होती। आत्महत्या हमेशा छिपकर करता है दूसरों के सामने नहीं करता। संथारा करने वाले व्यक्ति के मन में किंचित भी दुःख नहीं होता, संथारा भाव पूर्वक, विधि पूर्वक साक्षी पूर्वक किया जाता है। गुरू की, बड़ों की व परिवार वालों की आज्ञा लेकर, सभी चौरासी लाख जीव–योनि से क्षमायाचना कर लिया जाता है। परमात्मा की आज्ञा लेकर आत्मसाक्षी से किया जाता है।

वैष्णव धर्म का शास्त्र गीता, मुसलमानों की कुरान, क्रिश्चियन की बाईबल वैसे ही जैन धर्म का मुख्य शास्त्र उत्तराध्ययन सूत्र के चौथे अध्ययन में भगवान ने बताया यह शरीर जब तक धर्म साधना में आपको साथ देता है तब तक आप इसकी पूर्ति करते रहो पर जिस दिन आपको लगे कि अब यह आपकी धर्म–साधना करने में सहायक बनने की बजाय बाधक बन रहा है तब आप भी इसकी पूर्ति करना बंद कर दो।

आत्महत्या करने वाले का, खुद का नाम खराब होता है पूरे खानदान का नाम खराब होता है उसकी सात पीढ़िया बदनाम होती है पर संथारा करने वाले का नाम, कुल व खानदान सब उज्जवल हो जाते है। सात पीढ़ियों का नाम रोशन हो जाता है कोई कलंक लगा हुआ हो तो वह भी मिट जाता है।

संलेखना की भावना व अभ्यास :–

मृत्यु का भय तो मनुष्य के लगा हुआ ही है न जाने कब किस स्थिति में यह जीवन की डोरी टूट जाय, इसलिये मृत्यु सुधारने का

अभ्यास पहले से ही प्रारम्भ कर देना चाहिये। सदैव रात को सोते समय प्रातःकाल तक के व्रतों को अधिक से अधिक विकसित कर सागारी संथारा अवस्य करना चाहिये इससे अन्तिम साधना सरल हो जाती है।

आहार शरीर उपधि, पच्चक्खूं पाप अठार।
जब तक मैं बोलूं नहीं, एक बार नवकार।।

जैसे राजपुत्र शस्त्र विद्या का नित्य अभ्यास करता है और उसी से वह युद्ध में उस प्रकार का कर्म करने को समर्थ होता है। इसी प्रकार साधक को भी आराधना के योग्य नित्य अभ्यास करना चाहिये ताकि मरण काल में वह सम्यक् प्रकार से अपने मनोरथ को सफल करने में समर्थ हो सके।

संलेखना की विधि :–

संथारा करने वाला पहले संथारे का स्थान निश्चित करे। वह स्थान निर्दोष जीव–जन्तु और कोलाहल से रहित तथा शान्त हो। फिर उच्चार–प्रस्त्रवण भूमि (बड़ीनीत, लघुनीत परठने का स्थान) देखकर निर्धारित करे। इसके बाद संथारे की भूमि का प्रमार्जन करे और उस दर्भ आदि का संथारा बिछाकर पूर्व या उत्तर दिशा की ओर मुंह करके बैठे और इर्यापथिकी–गमनागमन का प्रतिक्रमण करे। फिर दोनों हाथ जोड़कर सिद्ध भगवान एवं अरिहन्त भगवान की नमोत्थुणं के पाठ से स्तुति करे। इसके बाद गुरुदेव को वंदना करके चतुर्विध तीर्थ से क्षमायाचना करते हुए संसार के सभी प्राणियों से क्षमायाचना करे तत्पश्चात् अपने पूर्व के व्रतों का स्मरण करे और उनमें लगे हुए दोषों की आलोचना करें इसके बाद अट्ठारह पाप और चारों आहार का जीवन भर के लिये त्याग कर दे।

आचारांग सूत्र, ठाणांग सूत्र, भगवती सूत्र, ज्ञाता धर्मकथांग सूत्र इत्यादि सभी सूत्रों में संथारे का वर्णन है। उपासक दशांग में दस श्रावकों ने संथारा किया। अन्तगड सूत्र में सभी ९० साधकों ने संथारा

किया। सिर्फ साधु व साध्वी ही संथारा नहीं करते, श्रावक–श्राविका भी संथारा करते हैं। उवबाई सूत्र में अम्बड़ सन्यासी के ७०० शिष्यों के संथारे का वर्णन आता है। उन्होंने कैसी स्थिति में संथारा किया। उनके नियम थे बिना आज्ञा नहीं लेंगे। पास में नदी थी व नदी में पानी था। पर आज्ञा देने वाला कोई नहीं था। ७०० में से एक भी शिष्य को व्रत भंग करना मंजूर नहीं था। सबने संथारा संलेखना कर लिया और सूत्र इस बात का संकेत कर रहा है कि वे सात सौ ही साधक मोक्ष में जायेंगे।

राय पसेणी सूत्र में सूर्याभ देव का वर्णन आता है व राजा परदेसी का वर्णन आता है। जीवन भर पाप में लगा रहा पर ऐसा व्यक्ति भी सुधर सकता है। यदि वह अन्तिम समय में संथारा संलेखना कर समभाव पूर्वक मरण को प्राप्त करता है।

आज के जमाने में यदि संथारे पर प्रश्न वाचक चिह्न लगा है तो गतल है। बहुत बार व्यक्ति जान–बूझकर प्रश्न चिह्न लगा देता है दुनिया में अच्छा कार्य करने वालों का भी नाम होता है तो जो विरोध करता है या गलत काम करता है उसका भी नाम हो जाता है ऐसा व्यक्ति सोचता है कि इस तरह रिट (याचिका) लगने से मेरा क्या जायेगा। सफलता मिलेंगी तो ठीक नहीं तो भी मेरा नाम तो सबके सामने आ ही जायेगा, इस प्रकार कौतुक के कारण व्यक्ति ऐसे कार्य कर लेता है। इस प्रकार से अज्ञानी व्यक्ति अनेक ऐसे कार्य बिना कारण के नादानी से व कौतुक से भी कर लेता है।

सुवर्णभूमि में कालकाचार्य

डॉ. उमाकान्त शाह

बृहत्कल्पसूत्र के कर्ता है प्राचीन गोत्रीय या प्राचीन जनपद के स्थविर आर्य भद्रबाहु। अपने बनाये हुए इस छेदसूत्र के चतुर्थ उद्देश में साधुओं के जलयान की चर्चा करते हुए आप लिखतें हैं– नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथ्रीण वा इमाओ पंचमहण्णवाओ महानदीओ उद्दट्ठाओ गणियाओ वंजियाओ अंतो मासा दुक्खुत्तो वा तिक्खुत्तो वा उत्तरित्तए वा संतरित्तए वा। तं जहा–गंगा, जउणा, सरउ, कोसिया मही। इस सूत्र के ऊपर निर्युक्ति भी देखनी चाहिए–

पंचणहं गहणोणं सेस्स वि उ सूइया महासलिला।
तत्थ पुरा विहरिंसु य, ण य तातो कथाइ सुक्खंति।।५६२०[1]

फिर आगे इसी विषय की विस्तृत चर्चा आती है। नावसन्तरण के भिन्न भिन्न दोष दिखलाते हुए बृहत्कल्प सूत्र के (निर्युक्तिकार या) भाष्यकार कहते हैं–

वीरवरस्स भगवतो, नावारूढस्य कासि उवसग्गं।
मिच्छद्दिट्ठि परद्धो, कंबल-संबलेहिं तारिओ भगवं ।। ५६२९[2]

भगवान् महावीर की नाव में चढ़े थे इसकी प्रतीति आवश्यक-निर्युक्ति गाथा ४६९-७१[3] से भी होती है।

उपर्युक्त भाष्यगाथाओं में प्रत्यनीकादि दोषों की चर्चा और इनसे बचने के लिए जहाँ तक हो सके, स्थल-रास्ता (खुश्की-रास्ता) ग्रहण करने के उपदेश के साथ ही नाव से या चलते ही नदी पार करने की चर्चा है। जहाँ जल की गहराई बिलकुल कम हो और जानू से भी नीचे जल हो, मतलब कि जहाँ

---

१. बृहत्कल्पसूत्र, उद्देश ४, ३२, विभाग ५, पृ० १४८७, गाथा ५६२०
२. वही, पृ० १४८९, गाथा, ५६२८.
३. आवश्यक-सूत्र, हारिभद्रीय वृत्ति, पत्र १९०-१

पाँव को जल के ऊपर ऊठा कर फिर आगे रखकर नदी में चल सकें वहाँ कीचड़ से बच सकते हैं और गिरने की या जीवहिंसा की सम्भावना अतीव कम हो जाती है। किन्तु इस सारी चर्चा में नावारोहण–नाव से नदी पार करने का--सम्पूर्ण प्रतिबन्ध नहीं रक्खा गया।

कालकाचार्य और सागर-श्रमण समुद्रमार्ग से–जहाजी रास्ते से–नहीं किन्तु खुश्की रास्ते से गये होंगे ऐसा हमारा खयाल है। और बृहत्कल्पभाष्य की चूर्णि और टीका के वृत्तान्तों की ध्वनि यही है। रास्ते में कालक के शिष्यों को लोग पूछते हैं, ये कौन से आचार्य जा रहे हैं ? इसका मतलब यही है कि वे खुश्की रास्ते से गये। ईसा के पूर्व की शताब्दियों में खुश्की रास्ता ज्यादा इस्तेमाल होता था। जहाजी व्यापार क्रमशः बढ़ा होगा। खुश्की रास्ते थे जो चीन (दक्षिण चीन) तक ले जाते थे। खुश्की रास्ते के विषय में डॉ० मजुमदार लिखते हैं—

" From early times there was a regular trade-route by land between Eastern India and China through Upper Burma and Yunnan. We know from Chinese Chronicles that in the second century B.C. merchants with their ware travelled from China across the whole of North India and Afghanistan to Bactria. Through this route came early Chinese priests for whom, according to I-tsing, an Indian king built a temple in the third or fourth century A.D. From different points along this route one could pass to Lower Burma and other parts of Indo China, and a Chinese writer Kia Tan, refers to a land route between Annam and India (Journal Asiatique, II-XIII, 1919, p. 461).[1]

श्रावकों के लिए तो सागर-गमन और नावारोहण निषिद्ध मालूम नहीं

---

१. डॉ० आर० सी० मजुमदार, एन्शिअन्ट इण्डियन कॉलनाइझेशन इन साउथ-ईस्ट एशिया (बड़ोदा १९५५), पृ० ४

होता है।[१] वसुदेवहिण्डि अन्तर्गत चारुदत्त कथानक का भी यही ध्वनि है, व्यापार के लिये जैन श्रावक द्वीपान्तरों में जहाजों से जाते थे। ज्ञाताधर्मकथासूत्र में भी रत्नद्वीप पहुँचे हुए वणिकों का प्रसंग है। अगर किसी प्रदेश में जैन गृहस्थों की वसति न हो तो वहाँ जैन साधु साध्वियों का विहार अतीव कठिन होता है क्योंकि आहार के बारे में नियमों का पालन करना मुश्किल हो जाता है। सागरश्रमण सपरिवार सुवर्णभूमि में थे ऐसे निर्देश का मतलब यह भी है कि वहाँ जैन गृहस्थ (साहसिक सौदागर) ठीक ठीक संख्या में मौजूद थे। इस तरह इस समय में (ई० स० पूर्व १५१-९०) भारतीय व्यापारियों का सूवर्णभूमि में जाना शुरू हो चुका था। व्यापार के लिए हरेक सम्प्रदाय के वणिक् जाते थे–जैन, बौद्ध या हिन्दू कोई भी हो। जैनाचार्य के वहाँ सपरिवार विहार के इस विश्वसनीय बयान का निष्कर्ष यह है कि ईसा के पूर्व की पहली दूसरी शताब्दियों में भारतीय सौदागर और भारतीय संस्कृति के सुवर्णभूमिगमन का हमें एक और प्रमाण मिलता है।

धर्म के प्रचार के लिए सिद्धि-विद्यासिद्धि या मन्त्रसिद्धि-इत्यादि के प्रयोग का जैनाचार्यों के लिए निषिद्ध नहीं था। ऐसी प्रभावना के कई दृष्टान्त मिलते हैं और ऐसे आचार्यों को प्रभावक आचार्य कहते हैं। आर्य वज्र, आर्य खपुट, आर्य पादलिप्त जैसे प्राचीन आचार्यों के ऐसे कार्य संघ को मान्य रहे थे। साध्वी को बचाने के लिये आर्य कालक ने जो किया वह भी धर्मविरुद्ध नहीं गिना गया। शककूल में और भारत में भी कालकाचार्य ने अपने विद्या, मंत्र और निमित्त-ज्ञान का परिचय दिया। ऐसे बड़े बड़े आचार्यों को प्रभावक आचार्य कहते हैं। ऐसे बहुश्रुत आचार्यों के आचरण में[२] शंका की बात तो दूर

---

१. श्री वीरचन्द गांधी जब अमरिका सर्वधर्मपरिषद में जाकर आये तब जैन संघ ने उनको प्रायश्चित करने को कहा। उस समय सुप्रसिद्ध जैनाचार्य श्री विजयानन्दसूरिजी (श्री आत्मारामजी महाराज) ने यही अभिप्राय दिया कि उनका समुद्रपार जाना निषिद्ध नहीं था। श्री आत्मारामजी महाराज का यह पत्र गुजराती साप्ताहिक जैन (भावनगर) के ता० २८-११-१९५३ के अंक में प्रकाशित हुआ है।

२. जैसे कि आर्य वज्र चैत्यपूजा के लिए पुष्प ले आये थे।

रही, वे आगे दूसरे आचार्यों और मुनियों के मार्गदर्शक भी गिने जाते हैं। आर्य वज्र, आर्य पादलिप्त, आर्य कालक आदि स्थविर प्रभावक आचार्य माने गये और प्रभावक-चरित्र में इनके चरित्र भी दिये गये। प्रभावशाली, बहुश्रुत, वृद्ध जैन आचार्य धर्माचरणविषयक मामले में प्रमाणभूत गिने जाते हैं और जहाँ शास्त्रों का पूरा खुलासा अनुपलब्ध हो या शास्त्रवचन समझ में न आवे वहाँ ऐसे पट्टधरों, युगप्रधानों, स्थविरों के मार्गदर्शन और कार्य प्रमाणभूत होते हैं।

श्रुतधर अनुयोगकार स्थविर आर्य कालक साध्वी को बचाने के लिए पारसकूल-शककूल गये और वहाँ से शकों को ले आये और गर्दभ का उच्छेद करवाया। आज तक आर्य कालक का यह कथानक जैन समाज में (विशेषतः श्वेताम्बर जैन संघ में) अतीव प्रचलित है। कालक कथा की कई सचित्र प्राचीन हस्तप्रतें मिलती हैं। सचित्र प्रतियों में कल्पसूत्र के साथ कालककथा की प्रतियाँ मिलती रहती हैं, यह पर्यूषणापर्वतिथि के साथ कालक का सम्बन्ध होने के कारण होगा। किन्तु शकों को लाने वाले कालक को इतना सम्मान मिलता है यही सूचक है।

आर्य कालक के जीवनकाल में उनके शकों को लाने के कार्य के विरुद्ध (और दूसरे कार्यों के विरुद्ध) कुछ आन्दोलन हुआ होगा। मन्त्र-विद्या और निमित्त के प्रयोग आम तौर पर जैन साधुओं के लिए उचित नहीं माने गये हैं। विद्यापिण्ड को तो निषिद्ध ही माना गया है। और फिर परदेश से शकों को इस देश में लाने का कार्य बहुत से लोगों को (जैनधर्मावलम्बी को भी) पसन्द न भी है।

गर्दभराजोच्छेदक कालकाचार्य के जीवन में साहस (adventure) का-पराक्रम का- तत्त्व स्पष्ट दिखाई देता है। वे कोई असाधारण व्यक्ति थे। उन्होंने जब देखा कि सूत्र नष्ट होते जा रहे हैं तब उन्होंने अनुयोग-ग्रन्थों की रचना की। बृहत्कल्पचूर्णि और टीका के अनुसार उनके अनुयोग को उनका शिष्यसमुदाय सुनता नहीं था। क्यों? अनुयोग के यहाँ दो अर्थ हैं—उपदेश प्रवचन और आर्य कालक के रचे हुए अनुयोग ग्रन्थ जिनका व्याख्यान आप करते होंगे। हम सुनते हैं कि आर्य कालक के शिष्य प्रव्रज्या में स्थिर नहीं रहते

थे। क्यों? क्या इन सब निर्देशों से यही सूचित नहीं होता कि कालक के क्रान्तिकारी असाधारण खयाल और कार्य, पुराने रास्ते को छोड़कर नये रास्ते पर चलने के साहस इत्यादि से संकुचित मनोवृत्ति वाले और प्रगतिविरोधी तत्त्व नाराज थे? हरेक मजहब की तवारिख में हम देखते हैं कि बड़े बड़े महात्माओं को ऐसे विरोध अपने जीवन में सहन करने पड़े यद्यपि आगे चलकर वे युगप्रधान माने गये। क्राइस्ट, महात्मा गांधी, तुकाराम, मीरा, कबीर आदि अनेक दृष्टान्त हमारे सामने मौजूद हैं। कालकाचार्य को भी ऐसी विपत्तियों का सामना करना पड़ा होगा।

जैन तवारिख में भी हम देखते हैं कि आर्य सुहस्ति के आचरण से आर्य महागिरि नाराज हुए थे। आर्य वज्र जब पूजा के लिये पुष्प ले आये तब उनका यह कार्य आम तौर से साधुओं के लिए उचित न था। उनका भी विरोध हुआ होगा। शकों को लानेवाले, आजीविकों से निमित्त पढ़नेवाले, निमित्तकथन और विद्याप्रयोग करनेवाले, पर्युषण पर्व की पञ्चमी तिथि को बदलकर चतुर्थी को यह पर्व मनानेवाले, नये अनुयोग-ग्रन्थ रचनेवाले आर्य कालक के सामने जरूर विरोधी तत्त्व खड़े हुए होंगे।[१] मगर आर्य कालक डरनेवाले थे ही नहीं। उनकी प्रकृति कोई असाधारण तरह की थी। जब उन्होंने देखा कि अपने ही शिष्य अपना ही अनुयोग सुनते नहीं थे तब उनको निर्वेद अवश्य हुआ मगर वे बैठे रहनेवाले या दबनेवाले नहीं थे। उन्होंने नये कार्यप्रदेश की ओर दृष्टि डाली। वे सुवर्णभूमि जा पहुँचे जहाँ भारतीय व्यापारी गये हुए थे ही, जहाँ उनका प्रशिष्य भी भेजा हुआ था ही और जहाँ भारत के अन्य धर्मावलम्बी सौदागर और साधु भी पहुँच चुके होंगे।

---

१. हमारे खयाल से कालक के शकों को लानेवाली घटना से ही ज्यादा विरोध हुआ होगा, परदेशी शासन को पसन्द करे ऐसी प्रजा गिरी हुई न थी। और न कोई भी प्रजा परदेशी-शासकों को लानेवाले को सन्मान देती है। साध्वी को बचाने के लिये जो करना पड़ा वह प्रभावना का कार्य था पर इस कार्य में राजकीय स्वार्थ न था इसलिये विरोध सार्वत्रिक न होगा। विरोध होने पर भी श्रुतधर स्थविर आर्य कालक को समझनेवाले, उनका सन्मान करनेवाले भी होंगे ही। कालक देशद्रोही नहीं गिने जा सकते।

शंका यह उपस्थित होगी कि अगर कालक के सुवर्णभूमिगमनवाली परम्परा सच्ची है तो फिर हमें सुवर्णभूमि में क्यों जैनधर्म के अवशेष मिलते नहीं? लेकिन इसका मतलब यह तो नहीं हो सकता कि भविष्य में मिलना असम्भव है। हम यह तो जानते ही हैं और भारतीय संस्कृति का ठीक-ठीक प्रचार इस समय में इन प्रदेशों में हो चुका था। इस समय में वहाँ जानेवाले व्यापारियों में जैन भी अवश्य होंगे यह तो सर्वसम्मत होगा। सातवीं सदी में हरिभद्रसूरि ने अपनी समराइच्चकहा में भी व्यापारियों के परदेशगमन के दिये हुए बयान भी यह सूचित करते हैं कि जैन सौदागर भी जाते थे। और उनके भी कोई अवशेष, जैन-प्रतिमा इत्यादि मिलना असम्भव नहीं। किन्तु हमें याद रखना चाहिये कि आर्यकालक और सागरश्रमण जैसे साहसिक स्थविरों की परम्परा भी न रही जो सुवर्णभूमि को जाय। और जब मगध और बंगाल में जैन संघ को आपत्तियाँ आई तब जैनसाधु ज्यादा करके मध्य, पश्चिम और दक्षिण भारत को अपने केन्द्र बनाते रहे। सुवर्णभूमि का खुश्की रास्ता था पर मगध और बंगाल की प्रतिकूल परिस्थिति के कारण वर्मा जानेवाले जैन साधुओं की परम्परा टूट गई।

कालकाचार्य का समय :

अब हमें यह सोचना चाहिए कि कालकाचार्य कब सुवर्णभूमि में गये। कालकाचार्य के बारे में विद्वानों ने खूब चर्चा की है। जैन सम्प्रदाय में अनेक कालकाचार्य कथानक मिलते हैं। डॉ० डब्ल्यु० नॉर्मन ब्राउन ने अपने स्टोरि ऑफ कालक नाम ग्रन्थ में ऐसे कई कथानकों, और कहावलीअन्तगत कालक-कथानक और चूर्णिग्रन्थों में से भी कितने ही उल्लेख उद्धृत किये हैं। डॉ० ब्राउन ने इस विषय में पूर्व में हुई चर्चा की सूची भी दी है। मुनिश्री कल्याणविजयजी ने प्रभावक-चरित्र के गुजराती भाषान्तर की प्रस्तावना में कालकाचार्य के विषय में चर्चा की है। और फिर द्विवेदीअभिनन्दन ग्रन्थ में कितने कालकाचार्य हुए और कब इस में इन सब कथानकों चूर्णियों के पञ्चकल्पभाष्य और पञ्चकल्पचूर्ण को छोड़कर) पाठ दिये हैं किन्तु चूर्णियों के कुछ संदर्भ संक्षिप्त हैं। खास करके यवनराज, गर्दभ और अडोलिया वाला, जिसका कालक से ज्यादा सम्बन्ध न मानकर संक्षेप किया है। इस

प्रकाशन को सम्पादित करनेवाले पं० अम्बालाल शाहने मुनिश्री कल्याणविजयजी के प्रतिपादनों का सारांश दिया है। आशा है कि इन प्रकाशनों को सामने रखकर विद्वद्गण आगे की चर्चा को पढेंगे।

कालकाचार्य के विषय में उपलब्ध सब निर्देशों (संदर्भों) को दो विभाग में बाँटना आवश्यक होगा। एक तो है निर्युक्ति, भाष्य चूर्णि और कहावली का विभाग जो दूसरे बिभाग से प्राचीन है और प्राचीनतर परम्पराओं का बना हुआ है। इसको ज्यादा विश्वसनीय मानना चाहिए। दूसरा है नवाब के प्रकाशन में दिया हुआ कालकाचार्य कथा प्राकृत विभाग, जिसमें नं० ३ वाले कहावली से लिये हुए संदर्भ को पहले विभाग में शामिल करना हागा और इससे अतिरिक्त सब कथानकों को दूसरे विभाग में।

कहावली को दूसरे विभाग से प्राचीन गिननी चाहिए। भाषा की दृष्टि से वह चूर्णियों से ज्यादा मिलती है। और इसमें जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण के बारे में ग्रन्थकार ने संपयं देवलोयं गओ ऐसा निर्देश किया है। अतः कहावलीकार और जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण के बीच में पांच शताब्दी का अन्तर मान लेना उचित नहीं।[१]

पहले विभाग से सम्बन्ध रखनेवाली हैं कल्पसूत्र-स्थविरावली, और नन्दीसूत्र की पट्टावली। दूसरी पट्टावलियों से ये दोनों ज्यादा प्राचीन हैं। दुःषमाकाल श्रीश्रमणसंघस्तोत्र और हेमचन्द्राचार्य की स्थविरावली भी इस विभाग से ज्यादा सम्बन्ध रखनेवाले हैं। मेरुतुंग की विचारश्रेणी इत्यादि दूसरे विभाग में हैं क्योंकि उन ग्रन्थकारों के लिए परम्परा ज्यादा विच्छिन्न रूप में थीं।

हम देखते हैं कि ज्यों ज्यों प्राचीन आचार्यों के साथ उत्तरकालीन ग्रन्थकारों का अधिक व्यवधान होता जाता है त्यों त्यों प्राचीन परम्परा की बातों का अधिक लोप होता जाता है। और पट्टावली जितनी अर्वाचीन उतनी ही अधिक अविश्वसनीय होती है। रत्नसञ्चयप्रकरण (विक्रम की १५-१६ शताब्दी)

---

१. विशेष चर्चा के लिए देखिये, **जैन सत्यप्रकाश** (अहमदाबाद), वर्ष १७ अंक ४ (जान्युआरी, १९५२), पृ० ८६-९१।

में चार कालकाचार्यों का समय निर्दिष्ट है। जब उनसे प्राचीन ग्रन्थकार तीन कालकाचार्यों का समय देते हैं। मेरुतुंग के सामने भी विच्छिन्न परम्परा थी और बहुत विरोधाभासवाली बातें भी इनकी लिखी हुई विचारश्रेणी में देखने मिलती है। मुनि कल्याणविजयजी ने अपने वीर निर्वाण संवत् और जैन काल-गणना के पृ० ५५-५७ पादनोंध ४७ में यह स्पष्ट रूप से बताया है।

ऐसी परिस्थिति में हमें प्रथम विभाग के ग्रन्थों और ग्रन्थकारों के आधार से ही छानबीन करके अनुमान करना ठीक होगा।

आर्य कालक के जीवन की घटनायें मुख्यतः सात हैं। दूसरे दूसरे संदर्भों में और कथानकों में ये सात घटनायें निम्नलिखित हैं—

१) दत्त राजा के सामने यज्ञफल और दत्त मृत्यु-विषयक भविष्य-कथन (निमित्त कथन)।

२) इन्द्र के सामने निगोद-व्याख्यान शक-संस्तुत निगोद-व्याख्याता आर्य कालक।

३) आजीविकों से निमित्त पठन और तदनन्तर सातवाहन राजा के तीन प्रश्नों का निमित्त-ज्ञान से उत्तर देना।

४) अनुयोगग्रन्थ-निर्माण।

५) गर्दभ-राजा का उच्छेदन।

६) प्रतिष्ठानपुर जाकर वहाँ सातवाहन की विज्ञप्ति से पर्यूषणा पर्वातिथि जो पञ्चमी थी उसके बजाय चतुर्थी करना।

७) अविनीतशिष्य-परिहार और सुवर्णभूमि-गमन।

१) तुरुविणी (या तुरुविणी) नगरी के राजा जितशत्रु को प्रपञ्च से हठाकर कालक के भागिनेय दत्त ने राज्य लिया और बहुत यज्ञ किये। गर्व से दत्त ने कालकाचार्य को इन यज्ञों का फल पूछा। जब कालक ने कहा कि सात दिन में दत्त बुरी तरह मरेगा तब कालकाचार्य को कैद किया गया मगर ठीक वैसे ही बुरे हाल दत्त मारा गया जैसा कि कालक का कथन था। सत्य-कथन था। सत्य कथन, सम्यक् कथन के दृष्टान्त में यह कथा दी गई है।

२) इस घटना में चमत्कार का तत्त्व ज्यादा होने से इसका ऐतिहासिक

अंश पकड़ना मुश्किल है। कथा ऐसी है कि एक समय इन्द्र ने पूर्वविदेहक्षेत्र में विहरमान तीर्थंकर सीमन्धरस्वामी से निगोद-जीवों के विषय में सूक्ष्म निरूपण सुना। फिर इन्द्र ने पूछा तब उत्तर मिला कि उस समय भारत में ऐसा सूक्ष्म निरूपण करनेवाले सिर्फ कालकाचार्य थे। कुतूहल से इन्द्र ने अपना शेष आयुष्य कितना रहा है ऐसी जब पृच्छा की तब आचार्य ने अपने ज्ञान से देखा कि दो सागरोपम आयुष्य अभी उस ब्राह्मण के लिए शेष था जो इन्द्र का ही हो सकता है। अतः आचार्य ने कहा—आप तो इन्द्र हैं। प्रसन्न होकर इन्द्र चला गया। कथा के चमत्कारिक तत्त्व को छोड़ दें तो इसमें से दो बातें फलित होती हैं वह याद रखना चाहिए—एक है कालकाचार्य का निगोद-जीवों के बारे में सर्वश्रेष्ठ ज्ञान और दूसरा है उनका ज्योतिषज्ञान-निमित्तज्ञान।

३ और ४) प्रसंगों का वृत्तान्त हम पञ्चकल्पभाष्य और चूर्णि के आधार से देख चुके हैं। इन दोनों घटनाओं में आर्य कालक के निमित्तज्ञान का स्पष्ट निर्देश है और इनके अनुयोग-निर्माण का उल्लेख भी है। इनके लोकानुयोग में भी निमित्तशास्त्र था।

घटना (२) में आर्य कालक के निमित्तज्ञान का महत्त्व सूचित है ही। अतः (३) और (४) घटनाओं को भी (२) के साथ ही जोड़ना होगा। यज्ञफलकथनवाली घटना (१) में भी निमित्तज्ञान का महत्त्व बताया गया है। अतः घटना (१) से (४) एक ही कालक के जीवन की होनी चाहिए।

निगोदव्याख्याता आर्य कालक के विषय में मुनिश्री कल्याणविजयजी लिखते हैं :— इनको निर्वाण से ३३५वें वर्ष के अन्त में युगप्रधानपद मिला और ४१ वर्ष तक ये इस पद पर रहें, जैसा कि स्थविरावली की गाथा में कहा है।[१] परन्तु विचारश्रेणी के परिशिष्ट में एक गाथा है जो इनका वी० नि० ३२० में होना प्रतिपादित करती है। पाठकों के विलोकनार्थ वह गाथा नीचे उद्धृत की जाती है—

सिरिवीरजिणिंदाओ, वरिससया तिन्निवीस (३२०) अहियाओ।
कालयसूरी जाओ, सक्को पडिबोहिओ जेण।।

---

१. मुनि कल्याणविजय, वीर निर्वाण संवत् और जैन कालगणना (जालोर, वि० सं० १९८१), पृ० ६४, पादनोंध ४६.

मालूम होता है कि इस गाथा का आशय कालकसूरि के दीक्षा समय को निरूपण करने का होगा। आगे मुनिजी लिखते हैं—रत्नसंजय में ४ संगृहीत गाथाएं हैं, जिनमें वीर निर्वाण से ३३५, ४५४, ७२०, और ९९३ में कालकाचार्य आचार्यों के होने का निर्देश है। इनमें पहले और दूसरे समय में होनेवाले कालकाचार्य क्रमशः निगोद व्याख्याता और गर्दभिल्लोच्छेदक कालकाचार्य हैं।[1] इसमें तो कोई सन्देह नहीं है पर ७२० वर्षवाले कालकाचार्य के अस्तित्व के बारे में अभी तक कोई प्रमाण नहीं मिला। दूसरे इस गाथोक्त कालकाचार्य को शक-संस्तुत लिखा है जो ठीक नहीं क्योंकि शक्रसंस्तुत और निगोद व्याख्याता एक ही थे जो पन्नवणाकर्ता और श्यामाचार्य के नाम से प्रसिद्ध थे और उनका समय वीरात् ३३५ से ३७६ तक निश्चित है। इससे इस गोथोक्त समय के कालकाचार्य के विषय में सम्पूर्ण सन्देह है।[2]

मुनिजी उत्तराध्ययन-निर्युक्ति की निम्नलिखित गाथा (नं० १२०) को उद्धृत करते हैं—

उज्जेणि कालखमणा, सागरखमणा सुवन्नभूमीए।
इंदो आउयसेसं पुच्छई सादिव्वकरणं च ।।

उत्तराध्ययन-सूत्र विभाग १, (दे. ला. पु० नं. ३३, बम्बई १९१६), पृ० १२५-१२७.

क्रमशः

---

१. मुनि कल्याणविजय, वीर निर्वाण संवत् और जैन कालगणना (जालोर, वि० सं० १९८१), पृ० ६४, पादनोंध ४६.

२. गाथा के लिए देखो, वही, पृ० ६१. यहाँ आर्यसुहस्ति के बाद गुणसुंदर वर्ष ४४ और उनके बाद निगोदव्याख्याता कालकाचार्य वर्ष ४१, उनके बाद खंदिल (संडिल या सांडिल्य) ३८ वर्ष तक युगप्रधान रहे ऐसा कहा गया है। संडिल के बाद रेवतीमित्र युगप्रधान रहे।

योगशतक

प्रस्तावना– डॉ. इन्दुकला हीराचन्द झवेरी

आ. हरिभद्र मानसविका :–

तत्त्वचिन्तन एवं आचार, और ख्रास करके तो योगाचार, विषयक इने-गिने ग्रन्थों के यहाँ पर किये संक्षिप्त अवलोकन परसे आ. हरिभद्रका मानस किस प्रकार उत्तरोत्तर विकासगामी रहा है और यह विकास उनकी विशिष्ट योग भूमिका में किस प्रकार पर्यवसित होता है इसका स्पष्ट परिचय मिलता है। यहाँ पर उपसंहार में इस विकास के दो उदाहरण हम दें तो वह उचित ही समझा जायेगा।

पहला उदाहरण सर्वज्ञत्वका और दूसरा वादकथा की निरर्थकता है। आ. हरिभद्र ने जब धर्मसंग्रहणी तथा सर्वज्ञसिद्धि जैसे ग्रन्थ लिखे तब उनकी विचारसरणी परंपराप्राप्त दार्शनिक मान्यता को तर्कपुरस्सर स्थापित करने की थी, अंतः वहाँ पर वह जैनपरंपरा मान्य सर्वज्ञत्व तर्कपुरस्सर स्थापना करते हैं।

जैन परंपरा भीमांसकसम्मत असर्वज्ञत्व या अपौरुषेयत्व को तो मानती ही नहीं और सर्वज्ञत्व को माननेवाले भी उसका अर्थ ऐसा करती है कि जो ज्ञान त्रैकालिक समग्र विशेषों का उनके सामान्य के साथ साक्षात्कार कर सके वही सर्वज्ञत्व है। इसके साथ ही जैनपरम्परा ऐसा सर्वज्ञत्व कपिल, सुगत आदि अन्य प्रवर्तकों में नहीं है। यह परंपरागत मान्यता आगमकाल से ही चालू है और इसका समर्थन तार्किक सिद्धसेन, समन्तभद्र और अकलंक आदि आचार्यों ने अत्यन्त भारपूर्वक किया है। इसी प्रथा का अनुसरण करते हुए हरिभद्र ने धर्म संग्रहणी आदि में सर्वज्ञत्वकी स्थापना, उसका स्वरूप तथा उसकी महावीर आदि में मर्यादितता तर्क से सविस्तार स्थापित की है और साथ ही यह भी स्पष्ट किया है कि सर्वज्ञत्व जिनके अतिरिक्त अन्य किसी में नहीं घटता।

तार्किक परम्परा की दृष्टि से ऐसी स्थापना करने पर भी जब वह योगसाधना का निरूपण करते हैं तब उनका मानस कोई विशिष्ट योगभूमिका का अवलम्बन लेकर उसके साथ संगत हो ऐसे स्पष्ट विचार निर्भयता के साथ उपस्थित करते हैं। वह सर्वज्ञत्व का मुद्दा ले करके ही संपदाय एवं परम्परा से

ऊपर जाकर कहते हैं कि निर्वाणतत्त्व का अनुभव करने वाले जो कोई हों वे सब सर्वज्ञ ही हैं। इसके (सर्वज्ञत्वके) विशेष का निर्णय अर्थात् कौन सर्वज्ञ है और कौन असर्वज्ञ है इसका निश्चय शक्य नहीं है, इत्यादि।

इसी प्रकार जब वह अनेकान्तजयपताका जैसे वादग्रन्थों की रचना करते हैं तब स्व-पर दर्शन के अनेक ग्रन्थों के आधार पर ही गहरी मीमांसा करते हैं, परन्तु जब वह साधना की भूमिका का अवलम्बन लेते हैं तब तो वह ऐसे वादों की निःसारता जोरदार शब्दों में व्यक्त करते हैं। वह कहते हैं, वाद एवं प्रतिवाद अनिश्चित होने से चाहे जिस तरह उन्हें रखा जा सकता है। ऐसे वादों द्वारा तत्त्व अर्थात् अन्तिम सत्य का पार नहीं पाया जा सकता, केवल धानी के बैल की भाँति चक्कर लगाना ही शेष रहता है। यह बात उपस्थित करते समय वह यह भी कहते हैं कि वादग्रन्थ अर्थशून्य है।

ये दो उदाहरण इतना समझने के लिए पर्याप्त हैं कि आ० हरिभद्र जब योग के बारे में विचार करते हैं तब किसी संकुचित वासना अथवा अभिनिवेश के वशीभूत न होकर वह एक सच्चे साधक की अनुभव वाणी ही सुनाते हैं और उसमें उनका मध्यस्थ एवं स्वतंत्र तत्त्वचिन्तन परकाष्ठापर पहुँचता है। इसी से उनके योगविषयक ग्रन्थ उनके समग्र साहित्य में मूर्धन्यस्थान रखते हैं।

आ. हरिभद्र के पहले अनेक शताब्दियों से विभिन्न साधक परंपराओं में योग विषयक साहित्य का निर्माण तो हुआ है और उनके बाद भी वैसे साहित्य की रचना बहुत हुई है। वह सब मूल्यवान भी है, परन्तु हम जानते हैं वहाँ तक किसी भी साधक ने आ. हरिभद्र के जैसा तुलनात्मक एवं समन्वयप्रधान योग साहित्य नहीं लिखा। इसी से भारतीय संस्कृति में उनकी विशिष्ट देन के बारे में हम इतना ही कह सकते है कि वह जिस तरह तत्त्वचिन्तन के बारे में उसी तरह योग के बारे में भी अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। हमारे इस विधान की प्रतीति कराने के लिए इतना ही सूचन करना पर्याप्त होगा कि कोई भी विद्वान या विचारक इस दृष्टि से उनके योगसाहित्य का अध्ययन-मनन करे।

समन्वय शब्द के अर्थ की कक्षाएँ :–

प्रस्तावना की समाप्ति करने से पहले एक बात के बारे में स्पष्टीकरण करना आवश्यक है। आ. हरिभद्र की विशेषता दिखलाते समय प्रसंगवश हमने

समन्वय शब्द का प्रयोग अनेक बार किया है। सब जगह पर उसका एक ही अर्थ नहीं है। अतएव उसके अर्थ की विभिन्न कक्षाएँ जानने पर ही आ. हरिभद्र की विशेषता यथावत् समझ में आ सकती है। जब किसी एक प्रश्न के बारे में अनेक मतभेद हों तब प्रत्येक मतविशेष किस दृष्टिबिन्दु से अथवा अपेक्षाविशेष से प्रवृत्त हुआ है यह बताकर उस प्रश्न के बारे में ऐसे सभी ज्ञान दृष्टिबिन्दुओं को यथास्थान व्यवस्थित करके रखना और एक का भी तिरस्कार न करना– यह समन्वय का एक अर्थ है। भिन्न विचारसारणी रखनेवाली परंपरा में तत्त्व अथवा आचार के विषय में रूढ़ खास खास शब्दों को (उनके अर्थ के बारे में मतभेद होनेपर भी) विशाल अर्थ प्रदान करके अपने अभिप्रेत अर्थ में घटाना और इस तरह दोनों की विचार सरणी तत्त्वतः भिन्न होने पर भी रूढ़ शब्दों द्वारा ऐसे अनेक शब्दों को, प्रतिपाद्य वस्तु की तात्त्विक एकता देखकर, एक ही अर्थ में घटाना और ऊपर से दिखाई देनेवाला मतभेद मिटाना, यह हुआ समन्वय का तीसरा अर्थ।

सामान्यतः समन्वय के अर्थ की ये तीन कक्षाएँ हैं। इनमें से पहली नयवाद एवं अनेकान्तवाद के नाम से आ. हरिभद्र के पहले से ही प्रसिद्ध है, परन्तु समन्वय के अर्थ की दूसरी और तीसरा कक्षा आ० हरिभद्र ने ही अपने तत्त्व चिन्तन एवं योगसंबंधी ग्रन्थों में मान्य रखी है। उदाहरणार्थ, ईश्वर, प्रकृति, अद्वैत, विज्ञान और शून्य जैसे उस उस दर्शन में रूढ़ शब्दों से सूचित होनेवाले वादों को अर्थविशेष और भावनाविशेष का पुट देकर और अपनी मान्यतारूप से घटाकर उन विभिन्न वादों में रहा हुआ अन्तर दूर करने का प्रयत्न किया है। इससे भी ऊँची कक्षा आखिरी है, जिसमें वह अविद्या क्लेश, वासना, कर्म एवं पाश आदि शब्दों को तथा उस उस संप्रदाय में मान्य मुक्त, बुद्ध, अर्हत् आदि शब्दों को एक ही अर्थ के बोधक बतलाकर और आध्यात्मिक दृष्टि से सभी योगसिद्धों को सर्वज्ञ मानकर विकल्पवासनाजनित विवाद शान्त करते हैं।

सिंहल की राजकन्या

सुदर्शना

आचार्यश्री विजयविशालसेनसूरिजी म. सा.

यह बात नहीं है राजा ! भगवान वीतराग अरिहंत देवों का दर्शाया यह ऐसा अद्‌भुत कल्याण मार्ग है कि वह हमें हर आपदा से हमेशा के लिये छुड़ाता है और बड़े मजे की बात है कि यह मार्ग बहुत सरल, एवं बिना जोखम का है। छोटी उम्र और मासूम तबियत के लोग भी आराम से कर सकें ऐसा यह धर्म है और तुरंत ही उसका फल देखने को मिलता है। इतना प्रभावशाली भी है।

भगवन्‌ ! यह धर्म तो हमें भी समझाइये !

अवश्य। यदि जिज्ञासा जागृत हो जाय तो मनुष्य तत्व को और ज्ञान की गहराइयों को पा लेता है। सर्वज्ञ देव का बतलाया धर्म सर्वथा हितकारी है। यह सभी कोई सुन नहीं पाते।। सुनकर भी समझना, समझकर श्रद्धा करना और श्रद्धा के होने पर भी हित की प्रवृत्ति करना मुश्किल होता है। जो मनुष्य अपने आत्महित की प्रवृत्ति नहीं करता वह दुर्लभ जीवन को कौडी के भाव हारकर चलता बनता है।

ये जन्म-मरण का विषचक्र - ये भवकी श्रृंखला से बाहर निकलने का ही अपना लक्ष्य होना चाहिये। इस ध्येय को कभी भी धुंधला नहीं होने देना चाहिये। यदि इसमें सफलता मिल जाये तो आत्म विकास में कोई बाधा नहीं आती।

भव से मुक्त होने के, मुक्ति पाने के दो रास्ते हैं। प्रथम मुनि धर्म का और दूसरा श्रावक धर्म का। इन्हीं को सर्व विरति या देश विरति धर्म अथवा साधु धर्म या गृहस्थ धर्म भी कहते हैं।

मुनि धर्म त्याग प्रधान है अतः मुक्ति के बहुत निकट है तो कमजोर और कायरों के लिये विकट मालूम होता है। इस मार्ग पर जाने वाले सर्वथा पाप और परिवार से दूर हो जाते हैं। हिंसा, मिथ्या भाषण, चोरी, अब्रह्म (विषय

सेवन) और परिग्रह-ममत्व ये पाँच महाआश्रव यानि बड़े पाप हैं। मुनि इनका मूल से त्याग करते हैं।

ये हिंसा करते नहीं, करवाते नहीं और हिंसक को अनुमोदन देते नहीं- मन से, वचन से, काया से।

चलने-फिरने, लेने-रखने, उठने-बैठने में सदा सावधानी रखते हैं।

आवश्यक हो उतनी ही - निर्दोष - वह भी प्रिय और हितकारी भाषा बोलते हैं।

विचार भी सदा पवित्र रखते हैं। शत्रु व मित्र पर समान भाव वाले होते हैं।

पराई निंदा-कथा छोड़कर तत्त्व बोध में सावधान रहना। सरल स्वभावी होना। गुरुओं की विनय पूर्वक अत्यंत आदरवाली भक्ति रखना। क्षमादि धर्म धारण करना। धीरता-गम्भीरता आदि गुण अर्जित करने। गृहस्थाश्रम का सर्वथा त्याग करना। गृहस्थों ने अपने परिवार आदि के लिए बनाये निर्दोष व भक्ष्य आहारादि माधुकरी वृत्ति (गौचरी) से प्राप्त कर जीवन-निर्वाह करना इत्यादि चर्या वाला मुनि धर्म संसार में श्रेष्ठ और संसार के सभी बुद्धिमानों को परम पूजनीय और आदरणीय-आचरणीय है।

इस धर्म का आचरण करने वाला महाभाग अति सत्त्वशाली जीव थोड़े ही काल में - अल्प भव में संसार के समस्त दुःखों का सम्पूर्णतया नाश कर मोक्ष पाता है। संसार से सदा का छुटकारा पाते हैं।

यदि इस मार्ग के लिए मनुष्य अपने आपको कमजोर महसूस करे तो उसे विधि पूर्वक गृहस्थ धर्म यानि श्रावक का धर्म स्वीकारना चाहिये। क्योंकि ये मार्ग लम्बा होते हुए भी मोक्ष का ही मार्ग है। बिना धर्म के जीवन को तो जीवन कहना भी बिडम्बना है। धर्म तो जीवन में अवश्य चाहिये ही चाहे वह थोड़ा ही सही। इसलिए श्रावक धर्म भी अद्‌भुत महत्त्व रखता है। इस धर्म में मुनि धर्म की भी गहरी सम्भावना रहती है।

(१) निरपराधी त्रस (चलते-फिरते) जीव को मारना नहीं।

(२) लोग हमें झूठा कहें ऐसी झूठी बात कभी नहीं बोलनी।

(३) पराया धन आदि नहीं लेना।

(४) परायी स्त्री (या पुरुष) से दाम्पत्य सम्बन्ध नहीं करना। तथा

(५) परिग्रह-धन-सोना-चांदी-रत्न आदि का परिमाण (नियमन) करना। ये पाँच अणुव्रतवाला गृहस्थ धर्म होता है।

इसके अलावा तीन गुणव्रत भी हैं :-

(१) दसों दिशाओं में जाने-आने के परिमाण का। तथा

(२) भोग (खाने पीने की चीजों का) तथा उपभोग (शरीर व उपभोग की - कपड़े, गहने, मकान, पति या पत्नी वगैरह चीजों) का नियम करना। तथा

(३) अनर्थ दंड का त्याग करना। इससे आत्मगुण का लाभ होता है अतः इन्हें गुणव्रत कहते हैं।

अनर्थ दण्ड का मतलब होता है, अर्थ शून्य पाप जन्य दण्ड। जो पाप बिना मतलब, बिना कारण ही किया हो वह। इसके चार प्रकार हैं :-

(१) पापोंपदेश - जैसे पड़ोसी वगैरह किसी को कहना अजी, दुकान नहीं जाना? धंधा बंदकर क्या निठल्ले बैठे हो? कपड़े नहीं धोने क्या? आज सीगड़ी-बिगड़ी नहीं जलाई क्या। रसोई नहीं बनानी? सब्जी ले लो अच्छी है, इत्यादि पाप उपदेश।

(२) आर्तध्यान । फायदा कुछ नहीं पर ध्यान खराब। मन पसंद चीजों या व्यक्ति के पीछे या पाने को झूरना। झूरने से कोई जायेगा आयेगा नहीं या इस उपाय से मिल जायेगा नहीं। किन्तु खराब ध्यान से पाप का बंध होगा। इसी तरह जो नापसंद चीजें या व्यक्ति आ पड़ी हैं। हमें दूर करना चाहते हैं पर होती नहीं है। इसके लिये भी जो घृणा का चिन्तन ध्यान होगा वह भी आर्तध्यान ही कहलायेगा।

(३) हिंसक उपकरण (छुरी, चक्कू, मूसल, घंट्टी, हमाम दस्ता, कोस, कुल्हाड़ी आदि) किसी को मांगे देना। तुम्हारी चीजों से हिंसा आदि कोई दूसरा करेगा। तुम्हें कुछ वह देगा भी नहीं। तुम्हें मिलेगा तो मात्र अर्थ शून्य-बेमतलब का पाप। और

(४) प्रमादाचरण (निद्रा-विकथा-आलस आदि)।

इन चारों प्रकार के अनर्थ दण्ड का त्याग करना चाहिये। इसके अतिरिक्त चार शिक्षाव्रत हैं।

(१) सामायिक।

(२) देशावगासिक।

(३) पौषधव्रत। और

(४) अतिथि संविभाग।

पाँच अणुव्रत, तीन गुणव्रत और चार शिक्षाव्रत मिलकर कुल गृहस्थ के बारह व्रत होते हैं।

इसके अतिरिक्त रात्रि भोजन का सर्वथा त्याग। शराब, शहद, मक्खन तथा मांस, मछली, अंड़े का त्याग। जमीनं के अंदर उगने वाले कन्द (आलू, मूली, गाजर, शकरकंद आदि) बहुबीज (जिस फलमात्र में बीज-ही-बीज हो- अंजीर, खस-खस आदि)। कच्चे दूध-दही या छाछ में कठोल (मूंग, उड़द, चना आदि जिन धानों की दाल बनती हो) मिला के खाना, रात्रि का बासी (जिसमें पानी का अंश भी सम्भव हो ऐसा) भोजन, पानी या नमक आदि के पानी से बनाये गये नींबू-मिर्च, कालीमिर्च आदि के अचार आदि पदार्थ खाने व बिना छाना पानी काम में लेना गृहस्थ के लिये बिलकुल त्याज्य है।

जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आश्रव, संवर, निर्जरा, बंध और मोक्ष ये नव तत्त्व हैं। अर्थात् संसार में इन नव के अलावा और कोई तत्त्व नहीं हैं। इन नवों तत्त्वों का अच्छा ज्ञान और गहरी श्रद्धा अत्यंत जरूरी है।

नव तत्त्व का सामान्य परिचय :-

(१) जीव तत्त्व के दो भेद हैं :- मुक्त और संसारी।

जो आत्माएं, शरीर, जन्म, बुढ़ापा, मौत, रोग-सोग संताप, क्लेश और उपाधि आदि से मुक्त, आठों कर्मों से रहित होते हुए भी अनंत सुखमय आत्मस्थिति का अनुभव कर रहे हैं वे सिद्ध हैं। ऐसे अनंत सिद्ध परमात्मा मोक्ष में विराजमान हैं। हमारा भी यही लक्ष है कि हम भी सिद्ध बनें और मोक्ष में पहुँचे।

आठ कर्मों से आवद्ध, जन्म-मरण की परम्परा में फंसा जीव संसारी कहलाता है, जो त्रिभुवन-तीनलोक स्वरूप संसार में जन्मता है, जीता है और सब कुछ छोड़कर मृत्यु पाता है। यह चक्र चलता रहता है, जो अपने आप कभी भी नहीं अटकेगा। मात्र मनुष्य ही प्रयत्न कर इसमें से निकल सकता है। ये संसारी जीवों का इन्द्रियों के आधार पर वर्गीकरण किया गया है।

पृथ्वी, पानी, आग, वायु और वनस्पति के जीवों को एकमात्र चमड़ी (इन्द्रिय) ही होने से ये सभी एकेन्द्रियजीव, और इनमें गति करने की अपने आप में सामर्थ्य न होने से स्थिर होने के कारण इन्हें स्थावर भी कहते हैं।

जलोय-अलसिये, क्रमि आदि को मात्र चमड़ी और जीभ ये दो इन्द्रियां होने के कारण ये द्वीन्द्रिय कहलाते हैं।

खटमल, जूं, चींटी, दीमक, कीड़े, मकोड़े आदि (चमड़ी, जीभ व नाक वाले) त्रीन्द्रिय कहलाते हैं।

बिच्छू, भंवरे, तितली, मच्छर, मक्खी, टिड्डी आदि (चमड़ी, जीभ, नाक और आँखवाले) जीव चउरिन्द्रिय कहलाते हैं।

मनुष्य, देव, नारक तथा तिर्यंच (पशुपक्षी) ये चमड़ी, जीभ, नाक, आंख एवं कान वाले) जीव पंचेन्द्रिय कहलाते हैं। ये सभी एक से पांच इन्द्रिय वाले जीव संसारी हैं। यह जीवतत्त्व की सामान्य बात हुई।

(२) अजीव तत्त्व। चेतना से रहित- निर्जीव या जड़ पदार्थ को अजीव कहते हैं।

(३) पुण्य- जिसके उदय से जीव सुख का व अनुकूलता का अनुभव करता है।

(४) पाप- जिसके उदय से जीव दुःख व प्रतिकूलता का अनुभव करता है।

(५) जिन साधनो- क्रियाओं या परिणामों के द्वारा जीव कर्मों से आबद्ध होता हो, उसे आश्रव कहते हैं।

(६) जिन साधनों क्रियाओं व परिणामों से (आने वाले) कर्मों को रोका जाय उसे संवर कहते हैं।

(७) अग्नि और लोहे की तरह एकाकार बने आत्मा और कर्म को अलग करने के उपाय को निर्जरा कहते हैं।

(८) मिथ्यात्वादि हेतुओं के द्वारा- अग्नि और लोहा। दूध और पानी की तरह आत्मा और कर्मों के आत्म-सात होने को बन्ध कहते हैं। और

(९) पुनः कर्म बंध के अभाव स्वरूप- सबल सत्पुरुषार्थ से संपूर्ण कर्म के क्षय को कर्म के बंधन से आत्मा के आत्यंतिक छुटकारे को मोक्ष कहते हैं।

क्रमशः

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone: 2268 2655

English :

1.	Bhagavati-sutra-Text edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:		
	Vol - 1 (satakas 1- 2)	Price : Rs.	150.00
	Vol - 2 (satakas 3- 6)		150.00
	Vol - 3 (satakas 7- 8)		150.00
	Vol - 4 (satakas 9- 11)		150.00
2.	James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Kolkata ; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunjaya.)	Price : Rs.	100.00
3.	P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	15.00
4.	Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord,	Price : Rs.	15.00
5.	Verses from Cidananda Translated by Ganesh Lalwani	Price : Rs.	15.00
6.	Ganesh Lalwani - Jainthology	Price : Rs.	100.00
7.	Lalwani and S. R. Banerjee- Weber's Sacred Literature of the Jains	Price : Rs.	100.00
8.	Prof. S. R. Banerjee Jainism in Different States of India	Price : Rs.	100.00
9.	Prof. S. R. Banerjee Introducing Jainism	Price : Rs.	
10.	Smt. Lata Bothra- The Harmony Within	Price : Rs.	100.00
11.	Smt. Lata Bothra- From Vardhamana- to Mahavira	Price : Rs.	100.00

Hindi :

1.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti Ki Kavita, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	20.00
3.	Ganesh Lalwani - Nilanjana, Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	30.00
4.	Ganesh Lalwani - Chandan-Murti Translated by Shrimati Rajkumari Begani	Price : Rs.	50.00

5.	Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira	Price : Rs.	60.00
6.	Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Raat,	Price : Rs.	45.00
7.	Ganesh Lalwani -- Panchdasi.	Price : Rs.	100.00
8.	Rajkumari Begani-Yado ke Aine me.	Price : Rs.	30.00
9.	Dr. Lata Bothra - Bhagavan Mahavira Aur Prajatantra	Price : Rs.	15.00
10.	Dr. Lata Bothra - Sanskriti Ka Adi Shrote, Jain Dharm	Price : Rs.	24.00
11.	Prof. S.R. Banerjee - Prakrit Vyakarana Praveshika	Price : Rs.	20.00
12.	Dr. Lata Bothra - Adinath Risabdev Aur Asthapad	Price : Rs.	250.00

Bengali :

1.	Ganesh Lalwani-Atimukta,	Price : Rs.	40.00
2.	Ganesh Lalwani-Sraman Sanskriti ki Kavita	Price : Rs.	20.00
3.	Puran Chand Shymsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma.	Price : Rs.	15.00
4.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Prasnottare Jaina-Dharma	Price : Rs.	20.00
5.	Dr. Jagatram Bhattacharya Das Baikalik Sutra	Price : Rs.	25.00
6.	Prof. Satya Ranjan Banerjee Mahavir Kathamrita	Price : Rs.	20.00
7.	Sri Yudhishthir Majhi Sarak Sanskriti O Puruliar Purakirti	Price : Rs.	20.00

Some Other Publications :

1.	Dr. Lata Bothra - Vardhamana Kaise Bane Mahavir	Price : Rs.	15.00
2.	Dr. Lata Bothra - Kesar Kyari Me Mahakta Jain Darshan	Price : Rs.	10.00
3.	Dr. Lata Bothra - Bharat Me Jain Dharma	Price : Rs.	100.00
4.	Acharya Nanesh - Samata Darshan Aur Vyavhar (Bengali)	Price : Rs.	
5.	Shri Suyesh Muniji - Jain Dharma Aur Shasnavali (Bengali)	Price : Rs.	50.00
6.	K.C.Lalwani - Sraman Bhagwan Mahavira	Price : Rs.	25.00

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2230-8105/2139,

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2454-5650

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029,
Ph: (S) 2464-1186, (R) 2475-3133

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2230 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: (O) 2282-8181-4/8780 (R) 2249-1243

SUVGYA BOYED
340, Mill Road, Apt. # 1407
Etobicolse, onterio m9 Cly8
416-622-5583

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember-2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2230-2074/8958 (D) 2230-3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2257-1697/7059 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2287-6516
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PSCO

MECHANICAL ENGINEERS & FABRICATORS.
Howrah Amta Road, Balitikuri Howrah

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2287-9277, 2287-2826
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
M/s. Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2237-6255

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230-0871/9372, 3022937172
(M) 9330926774

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
M/s. D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 3288-8088/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2272-1033
Fax : 91-33-22702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9331019835, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL & BIKANER WOOLLEN MILLS
4, Srinath Katara, Main Road,
Bhadohi, Pin : 221 401 (U.P.)
Ph: (05414) 225178, 225778, Fax : (05414) 225378 (Bhdohi)
Phone : (0151) 2522404, 2225400, Fax : (0151) 2202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports (P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 534-535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2210-3253
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
63A, Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane,
Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2274-6241/3474 (O) 2269-0581

In the Sweet Memory of my mother
LATE SOVABOTI DUSAJ
Shri Manilal Dusaj
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone : 2237-5869, Mobil : 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar,
Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s. B.B. Enterprises
24 Ray Street, 2nd Floor, Kolkata - 700 00
Phone : 3258-2284/9831030188

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamond
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street,
Kolkata - 700 007, Ph: 2272-3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 001
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

With Best Wishes
INDUSTRIAL PUMPS & MOTOR AGENCIES
40, Strand Road, 4th Floor, R.N.3, Kolkata - 700 001

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2230 5059 / 2230 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

With Best Compliments From-
STEELUX INDIA; CIVIL CONTACTORS
13/5 Hazi Jakaria Lane, Kolkata - 700 006

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2287-7880, 2287-8663, Res) 2287-8128, 2287-9546

MAHENDRA TATER
Block No. 2, 3rd Floor,
45/4A, Chakraberia Road (S)
Kolkata - 700 025

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2230-7162, 2231-5540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

TAPAN KUMAR SAHELA
Office :
Shiv Bhawan, Police Line Road
Bhagalpur - 812001
Phone : 0641-2421091, 2301041 (O)
(Mob.) 9431214315

APARAJITA BOYED
M/s. Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 2287-3450/3758, 2281-1690, 2290-0514/3450
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

WITH BEST WISHES
जो एक को जानता है, वह सबको जानता है और
जो सबको जानता है वह एक को जानता है।

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2230 1958/4110

PABITRA KUMAR DOOGAR
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-256896

SHRI VIJAY NAHATA
58, Walver Hallow Road
Upper Brook VileNew York - 11545
E-mail : nahata@aol.com

In the sweet memory of our mother
Late Karuna Kumari Kuthari
Jyoti Kumar Kuthari
12, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2230 3142 (O) 2475 0995,
Ranjan Kumar Kuthari
1A, Vidya Sagar Street, Kolkata - 700 009
Phone : 2350 2173, 2351 6969

With Best Compliments from :-
22, Strand Road
2nd Floor
Kolkata - 700 001
Phone : 22131484, Fax : 22131488

BIKASH CHHAJER
Director
SITAL GROUP OF COMPANIES
'Centre Point', 21, Hemanta Basu Sarani
2nd Floor, Room No. 226, Kolkata - 700 001
Phone : 2242-9265, 2210-9228, Fax : (033) 2242-9265
Mobile : 98310 22577, E-mail : finncon@vsnl.net

In the memory of my father
Late Nawaratan mull Singhvi
N. M. SINGHVI
3E, UPASANA, 48, Kali Temple Road
Kolkata - 700 026, Phone : 2466 8186 (R)

In the sweet memory of our Father
Late Devi Singhji Kochar
Shashipal Kochar
Katra Ahluwala
Amritsar - 143 006

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan	Bhaonagari Ghantia
Kolkata Nasta	Jocker
Badsha Khan	Lajawab
Picnic	Papri Ghantia
Raja	Rim Jhim
Shubham	Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3293-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

	Phone:
Gram "GANGJUTMIL"	2226-0881
Fax: + 91-33-245-7591	2226-0883
Telex: 021-2101 GANG IN	2226-6283
	2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. **Quality Since 1940**

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)
Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

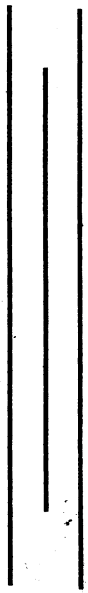

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 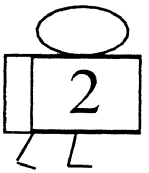 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

All Prices BELOW M.R.P.

FREE HOME DELIVERY

PARKING AVAILABLE

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbi eared to tread)

SPML

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com
Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228,
Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020
Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road,
Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design, Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

With Best Compliments

B.C. JAIN JEWELLERS
Since 1976

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

TITTHAYARA
Vol XXX. No. 10
25th January 2007

Registered
No. SSRM/KOL./RMS/WB/ RNP - 070/2007-09
R.N.I. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225